



ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 99

सहयोग शुल्क : रु. 1 / अप्रैल : 2025

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई



ॐ शालिनी सरस्वती राख के ढेर से पुनःजीवित ॐ होते पंखी का पर्याय है ।

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

ॐ शालिनी सरस्वती मानवीय संभावनाओं ॐ का द्रष्टांत है।

- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रू. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रू. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरूरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

अपैल : 2025, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष-6 अंक : 99



संपादकीय

मनुष्य की संभावनाओं के अनगिनत द्रष्टांत हमारे सामने उपलब्ध है और उन द्रष्टांतों में एक नया द्रष्टांत है शालिनी सरस्वती का । अपनी शादी की साल गिरह मनाने के बाद आई बीमारी के चलते शालिनी ने मानो अपना सब कुछ खो दिया था । दोनों हाथ और दोनों पैर खो देने के बाद शायद ही कोई मनुष्य इतनी इच्छा शक्ति और उम्मीद रख पाता है । अपना पैर कटवाने जाने से पहले पैरों की उंगलियों पर नेइल पोलिश कर उन्हें सजाकर भेजने की जो हिम्मत शालिनी में है वह शायद ही किसी में हो सकती है । दोनों पैर और हाथ खो देने के बाद एथलिट बनने की उसकी इच्छा शक्ति उसे १० किलोमीटर की मैराथोन दौड़ा सकती है ।

शालिनी संसार के सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा है । कोई अन्य व्यक्ति होता तो शायद वह अपनी जिंदगी को खतम कर देने की कोशिस करता लेकिन शालिनी को तो पैरालंपिक में भाग लेना है, उसमें दौड़ना है । शालिनी स्वयं एक जीवंत द्रष्टांत होने के साथ साथ अन्य लोगों को अपने ब्लोग पर प्रेरक बातें लिखकर प्रेरित करती रहती है । वह अपने ब्लोग पर लिखती है-“इतना सब होने के बाद मैं कैसे उबर पाई? सचमुच मुझे नहीं पता । हर दिन का एक एक पल मैंने जिया। छोटे-छोटे पड़ाव पार किए, प्रेरणा देने वाली खूब किताबें पढ़ीं, जिन पर मेरी जिंदगी टिकी थी । शास्त्रीय संगीत सीखा । इससे भी ज्यादा एक उम्मीद की रौशनी में जी रही थी, हर दिन लगता था कि आने वाला दिन इससे बेहतर होगा । मैं जानती थी कि आने वाला कल और खुबसूरत होता जायेगा क्योंकि जब आप सबसे नीचे होते हैं तो हर रास्ता आपको ऊपर ही ले जाता है । ”

शालिनी को हमारा स्नेह और आशीर्वाद ।

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी ।

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेंट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200



दोनों हाथो और पैरो को गंवाकर भी नहीं गंवाया हौसला – दौड़ी 10 किमी मैराथन !

शालिनी सरस्वती के दोनों हाथ-पैर नहीं हैं लेकिन वे मैराथन में दौड़ी हैं। शालिनी 'TCS World 10K' में दस किलोमीटर की रेस दौड़ी है।

बेंगलुरु भारत का आईटी हब... यह शहर लाखों युवाओं के सपने पूरे करता है और उन्हें नए सपने भी दिखाता है। यही शहर कुछ ऐसे सपने भी लोगों को देता है, जिन्हें सुनकर आप दांतों तले अंगुली दबा लेंगे। बेंगलुरु की शालिनी सरस्वती ने भी इसी शहर में रहते हुए एक सपना देखा। कुछ कर दिखाने का सपना.... आगे बढ़ने का सपना... आम लड़के-लड़कियों के लिए इस तरह का सपना देखना कोई अनोखी बात नहीं है। बहुत-से लड़के-लड़कियां शालिनी जैसे ही सपने देखते भी हैं और पूरे भी करते हैं, लेकिन शालिनी इस पूरी भीड़ से एकदम अलग हैं। शालिनी के दोनों हाथ और पैर नहीं हैं। बावजूद, शालिनी ने दौड़ने का ना केवल सपना देखा और उसे पूरा भी किया।

जिसने जीने की ठान ही ली हो ना उससे मौत भी डर जाती

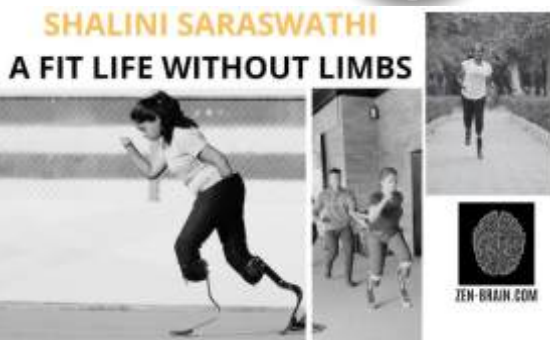
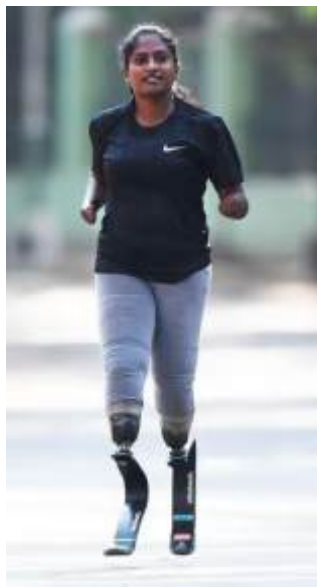
है। फिर ये दुनिया क्या, अपना शरीर भी न साथ दे, क्या फर्क पड़ता है? शरीर के हिस्से एक-एक करके साथ छोड़ते जाते हैं और कुछ काटकर अलग कर दिए जाते हैं।

लेकिन हिम्मत है कि और बढ़ती जाती है। ये कहानी है उस जिन्दादिली की जिसने न सिर्फ मौत को पटकनी दी बल्कि अपने वजूद को प्रेरणा की एक मिसाल बना दिया। बेंगलुरु की शालिनी का सफ़र इतना दर्दनाक है कि सुनकर भी रूह कांप जाती हैं।

शालिनी जन्म से ऐसी नहीं थी बल्कि अभी कुछ साल पहले तक एक वे बिलकुल ठीक थी और माँ भी बनने वाली थी, लेकिन ज़िन्दगी को उनकी खुशियाँ नागवार गुजरीं और एक के बाद एक ऐसे हादसे हुए कि पूरी तासीर ही बदल दी।

2013 में शालिनी जब कम्बोडिया से अपनी शादी की चौथी साल गिरह मना कर लौटीं तब उन्हें हलका सा बुखार हो गया। 37 वर्षीय शालिनी उस वक़्त गर्भवती थी। डॉक्टरों को दिखाया तो उन्हें डेंग्यू लगा और इलाज शुरू हो गया। लेकिन जल्दी ही ये बीमारी एक दुर्लभ बैक्टीरिया इन्फेक्शन में बदल गयी। शालिनी सीधे ICU में पहुँच गयीं





शालिनी का बाया हाथ 2013 में ही काटकर अलग कर दिया गया था। कुछ ही महीनों बाद एक दिन अस्पताल में दाया हाथ अपने आप कट कर गिर गया।

“छह महीने के बाद एक दिन मेरा दाया हाथ अपने आप कट कर गिर गया। जब शरीर को किसी हिस्से की जरूरत नहीं होती तो वो उसे छोड़ देता है। मैं समझ गई थी कि जिंदगी कुछ छोड़कर आगे बढ़ने का संकेत दे रही है,” शालिनी अपने ब्लॉग में लिखती है।

और कई महीनों तक उन्हें वहाँ रखा गया। डॉक्टरों ने बताया कि उनके बचने की सम्भावना सिर्फ 5 प्रतिशत हैं। इलाज के दौरान शालिनी को अपना अजन्मा बच्चा खोना पड़ा।

बीमारी से जंग चरम सीमा पर थी। खतरनाक गैंगरीन ने आक्रमण किया और डॉक्टरों ने कह दिया कि उनका बायाँ हाथ काटकर अलग करना पड़ेगा। शालिनी बच्चों की तरह चीख पड़ीं।

शालिनी के पति प्रशांत उस दर्द को सोच कर ही सिहर जाते हैं,

“डाक्टरों ने बिना बेहोशी की दवा दिए उनके शरीर से मृत कोशिकाओं को हटाना शुरू कर दिया। शालिनी दर्द से बुरी तरह चिल्लाती रहतीं। बाद में डॉक्टरों को एहसास हुआ कि उनकी काटी गयी कोशिकाओं में जीवित कोशिकाएं भी शामिल थीं,” प्रशांत ने टाइम्स ऑफ़ इंडिया को बताया।

शालिनी की कठिन परीक्षा जैसे अभी शुरू ही हुई थी। जिंदगी जब हद से गुजरती है तो असहनीय दर्द भी सुन्न होने लगता है। या फिर कोई तो ऊर्जा होती है जो सहने की ताकत देती रहती है। डॉक्टरों ने शालिनी की दोनों टाँगें भी काटने का फैसला कर लिया।

जिस दिन उसके दोनों पैर काटे जाने थे, उस दिन वो पैरों में चमकती लाल नैल-पोलिश लगा कर अस्पताल गई। “अगर मेरे कदम जा रहे हैं तो उन्हें खूबसूरती से विदा करूंगी”

शालिनी न सिर्फ इस भयावय परिस्थिति से स्वयं उबरीं बल्कि हर





किसी के लिए एक मिसाल बनकर उभरी है। अब शालिनी ने अपनी नौकरी फिर से ज्वाइन कर ली है।

उन्होंने जर्मनी की एक कंपनी से लोन पर दौड़ने ले लिए कार्बन फाइबर-ब्लेड लिए हैं क्योंकि ये फाइबर ब्लेड लगभग दस लाख रुपयों के है जो वे नहीं खरीद सकती। पर दौड़ना अब उनका जूनून बन गया है।

“इतना सब होने के बाद मैं कैसे उबर पाई? सचमुच मुझे नहीं पता। हर दिन का एक एक पल मैंने जिया। छोटे-छोटे पड़ाव पार किए, प्रेरणा देने वाली खूब किताबें पढ़ीं, जिन पर मेरी जिंदगी टिकी थी। शास्त्रीय संगीत सीखा। इससे भी ज्यादा एक उम्मीद की रौशनी में जी रही थी, हर दिन लगता था कि आने वाला दिन इससे बेहतर होगा। मैं जानती थी कि आने वाला कल और खूबसूरत होता जायेगा क्योंकि जब आप सबसे नीचे होते हैं तो हर रास्ता आपको ऊपर ही ले जाता है,” शालिनी ने अपने ब्लॉग में कहा।

कोच बी पी अयप्पा की कोचिंग में प्रशिक्षण ले रही शालिनी का लक्ष्य सिर्फ दस किलोमीटर की मैराथन में



दौड़ना भर नहीं है बल्कि जीवन की में दौड़ में आगे दौड़ना चाहती है।

शालिनी के कोच उसे हमेशा सामान्य एथलीट की तरह देखते हैं, जिससे उसका उत्साह दुगना हो जाता है पर।

शालिनी ने अपने ब्लॉग पर लिखे एक लम्बे लेख में जिन्दगी की कुछ अहम बातें लिखी हैं, जो उन्होंने इस दौरान सीखी हैं। शालिनी हर पल को पूरा का पूरा जी लेने में यकीन रखती हैं।

“बारिश में निकलो, मुंह खोलो और कुछ बूंदों को आने दो.. अपने पैरों के नीचे नरम घास महसूस करो.. अजनबियों को देखकर एक छोटी सी मुस्कान, खूबसूरत लोगों को देखकर आकर्षण पनपने दो. फ्लर्ट करो.. प्यार में डुब जाओ। उससे मिलो जिसके लिए तुम बहुत मायने रखते हो, कसकर बाँहों में भर लो.. नाचो जब तक गिर न जाओ.. खाहिशें लिख लो.. खूब जोर से चिल्लाओ, कोई संगीत उपकरण बजाना सीखो। आकाश में तैरो दुनियां घूम लो.. आज और अभी इस पल को जी लो.. कोई नहीं जानता कल क्या होगा।”



शालिनी दिव्यांगों के लिए ही नहीं हम सबके लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं। ज़िन्दगी परीक्षाएं लेती है, लेकिन हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। उसका अगर डटकर मुकाबला करें तो मौत भी डर जाएगी।

शालिनी सरस्वती भरतनाट्यम डांसर थीं। 'थीं', क्योंकि चार साल पहले इन्हें एक रेयर बीमारी हुई।

जिसके चलते इनके दोनों हाथ-पांव चले गए, लेकिन इच्छाशक्ति नहीं गई शालिनीने 'TCS वर्ल्ड 10K' खुली दौड़ में हिस्सा लिया। शालिनी एक डांसर होने के साथ-साथ एक कॉल सेंटर में नौकरी करती थीं। 2012 की बात है। शालिनी अपने पति प्रशांत के साथ कंबोडिया गई थीं छुट्टी मनाने, वहां पहुंच कर पता चला कि वो प्रेगनेंट हैं। पति-पत्नी की खुशी का ठिकाना नहीं था। शालिनी प्रोफेशनली भी अच्छा कर रही थीं। जिंदगी में सब कुछ ठीक-ठीक हो रहा था। लेकिन कुछ ही महीनों में शालिनी को पता चला कि उनके शरीर में 'रिकेटसियल एटमॉस' नाम का बैक्टीरिया घर कर चुका है। बैक्टीरिया की वजह से शालिनी का बच्चा गर्भ में ही मर गया। शालिनी को लगा कि बीमारी प्रेगनेंसी से जुड़ी हुई है, ठीक हो जाएगी। ब्लड टेस्ट में पता चला कि प्लेटलेट की कमी है। डॉक्टरों को लगा डेंग्यू है, लेकिन धीरे-धीरे शालिनी के हाथ-पांव भी सड़ने लगे थे। शालिनी को ICU में शिफ्ट कर दिया गया। 4 दिन बेहोश रही, डॉक्टरों ने उम्मीद छोड़ दी थी।



लेकिन शालिनी उठी। ठीक अपने बर्थडे के दिन। यानी 5 अप्रैल को। शालिनी ने अगले एक महीने तक अपने हाथ-पांव सड़ते हुए देखे। उनसे आती हुई बदबू बर्दाश्त की। हर हफ्ते सड़ी हुई खाल कटवाने जाने पड़ता था।

शालिनी ने आयुर्वेद का सहारा लिया, पर कुछ हुआ नहीं। सितंबर 2013 में शालिनी को अपने दोनों हाथ-पांव कटवाने पड़े। शालिनी को मालूम नहीं था कि उन्हें अपने बचे हुए शरीर के साथ क्या करना है? फिर एक दोस्त ने उनके कोच ऐयप्पा से मुलाकात करवाई। 2015 में शालिनी की ट्रेनिंग शुरू हुई। और आज शालिनी हजारों लोगों के साथ दौड़ने के लिए तैयार हैं।

शालिनी सरस्वती कई दिन आईसीयू में रहीं उनके बचने की केवल पांच फीसदी उम्मीद थी। इलाज के दौरान शालिनी ने अपने बच्चे को खो दिया और शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से बहुत आहत हुईं। शालिनी बच तो गईं, उस समय उनके शरीर के कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था। हालांकि, उनकी जीजिविषा ने उन्हें मौत से बचा लिया। लेकिन उन्हें अपने दोनों हाथ और दोनों पैर गंवाने पड़े।

"मैं इन सब से कैसे गुज़री - ईमानदारी से कहूँ तो मुझे नहीं पता। मैंने हर दिन को एक बार में जिया, अपने लिए छोटे-छोटे लक्ष्य बनाए, हर वो किताब पढ़ी जो मेरे



हाथ में आ सकती थी और जैसे मेरा जीवन उसी पर निर्भर करता था, शास्त्रीय संगीत सीखा, दोस्तों के आने का इंतज़ार किया - किसी भी चीज़ से ज़्यादा मुझे उम्मीद थी और

विश्वास था कि कल बेहतर होगा... मुझे पता था कि कल खूबसूरत होगा क्योंकि जब आप सबसे निचले स्तर पर पहुँच जाते हैं, तो आपके लिए सिर्फ़ ऊपर की ओर जाने का ही रास्ता होता है।"

उनके कोच अयप्पा कहते हैं कि उन्होंने शालिनी के साथ कभी भी अन्य एथलीटों से अलग व्यवहार नहीं किया। "मैं उसके साथ कभी भी नरम नहीं रहा क्योंकि वह दिव्यांग थी। पिछले शनिवार को हमने रेस रूट से 10 किलोमीटर की दौड़ लगाई और मुझे उम्मीद है कि वह रविवार को लगभग 90 मिनट में रेस पूरी कर लेगी," उन्होंने टाइम्स ऑफ़ इंडिया को बताया।

शालिनी ने अब फर्स्ट सोर्स सॉल्यूशंस में डिप्टी जनरल मैनेजर के तौर पर अपना करियर फिर से शुरू कर दिया है। लेकिन जीवन में छोटी-छोटी चीज़ें ही उनके लिए मूल्यवान हैं और वह दूसरों को भी उनकी सराहना करने के लिए प्रेरित करना चाहती हैं:



" तो बारिश में चलें, अपनी जीभ बाहर निकालें और बारिश की बूंदों को पकड़ें, हाथ पकड़ें, अपने पैरों के नीचे घास को महसूस करें, अजनबियों को देखकर मुस्कुराएं, अच्छे दिखने वाले पुरुषों/महिलाओं की प्रशंसा करें, प्यार में पड़ें, किसी को कॉल करें जिससे आप बात करना चाहते हैं, कसकर गले लगाएं, किसी लड़के या लड़की को चूमें (यदि वह आपकी चीज है), फ्लर्ट करें, थकने तक नाचें, अपनी लाल लिपस्टिक

लगाएं, उस क्लास में शामिल हों जिसमें आप हमेशा से शामिल होना चाहते थे, अपने मनचाहे जूते खरीदें, एक किताब लिखें, ऊंची आवाज में गाना गाएं, कोई वाद्य बजाना सीखें, बंजी जंप करें, स्काई डाइव करें, अंटार्कटिका की यात्रा करें - मुझे बस यही चिंता है - आज जिएं और वर्तमान में जिएं - आप नहीं जानते कि कल क्या होने वाला है!" यह कहना है उन सबसे

आश्चर्यजनक महिलाओं में से एक का जिनके बारे में लिखने का हमें कभी सम्मान मिला है।

शालिनी सरस्वती एक साधारण और खुशहाल शादीशुदा महिला थीं। उनके माता-पिता केरल के कोल्लम जिले से हैं, लेकिन





शालिनी का जन्म और पालन-पोषण बेंगलोर शहर में हुआ। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट मैरी गर्ल्स हाई स्कूल से की। उसके बाद, उन्होंने बेंगलोर के माउंट कार्मेल कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वह एक डांसर थीं और बीपीओ में काम करती थीं।

समय के साथ उन्होंने अपनी नई स्थिति को स्वीकार कर लिया और बिना हाथ-पैर के ही खुद को ढाल लिया। शालिनी सरस्वती ने अपने हाथ-पैर खो दिए थे, लेकिन हिम्मत नहीं हारी। 2014 में उन्होंने कृत्रिम पैर की मदद से फिर से चलना शुरू किया। लंबे समय तक चलने-फिरने में असमर्थ होने के कारण उनका वजन बढ़ गया था और अब वह स्वस्थ होना चाहती थीं। हालांकि जिम जैसी पारंपरिक व्यवस्था उनके अनुकूल नहीं थी और न ही सही ट्रेनर।

शालिनी सरस्वती की मुलाकात एक दोस्त के ज़रिए कोच बीपी अयप्पा से हुई। उनकी ट्रेनिंग 2015 में शुरू हुई। उन्होंने कोच बीपी अयप्पा की देखरेख में कांतीरवा स्टेडियम में हर सुबह 90 मिनट तक अभ्यास, वॉकिंग और संबंधित वर्कआउट करना शुरू किया। 2016 में कोच अयप्पा के सुझाव पर उन्होंने दौड़ना शुरू किया और इसे अपना लक्ष्य बना लिया।

उसी वर्ष, TCS 10K में भाग लिया और 2:02



घंटे में मंजिल तक पहुँच गई। 2017 में अपने समय में सुधार करते हुए, उसने 1:35 घंटे का समय लिया। 2018 में, उसने राष्ट्रीय स्तर के खेलों में भाग लिया और 100 मीटर स्प्रिंट में तीसरा स्थान हासिल किया। शालिनी अब एक निपुण पैरा-एथलीट है। वह जापान में अगले साल होने वाले पैरालिंपिक के लिए क्वालीफाई करने के लिए प्रशिक्षण ले रही है।

पेशेवर एथलीट होने के अलावा, शालिनी सरस्वती एक प्रेरक वक्ता और ब्लॉगर भी हैं। वह फर्स्ट सोर्स सॉल्यूशंस बीपीओ कंपनी की डिप्टी जनरल मैनेजर भी हैं। लॉकडाउन के दौरान, शालिनी ने फायरवॉल के साथ व्लॉगिंग शुरू की, जो सिलिकॉन वैली-आधारित ऐप है जो मूल एपिसोड सीरीज़ पेश करता है और उपयोगकर्ताओं को 30 सेकंड के वीडियो खोजने, बनाने और साझा करने में सक्षम बनाता है। शालिनी इस ऐप में अपने जीवन को साझा करती हैं जिसका नाम "ब्रेकिंग बैरियर - शालिनी 2.0" है। वह अपने विचार लिखती हैं और वीडियो बनाती हैं। फायरवॉल एडिटिंग और मिक्सिंग करता है।

शालिनी अगस्त के अंत से हर हफ्ते 5 वीडियो प्रकाशित करती हैं और उनके पेज को एक महीने से भी कम समय में 2,57,154 बार देखा गया है, जिसमें एक वीडियो को 200,000 से अधिक बार और दूसरे को 13,000 से अधिक बार देखा गया है।

रास्ते कभी खत्म नहीं होते, सिर्फ लोग हिम्मत हार जाते हैं।

तैरना सीखना है तो पानी में उतरना पड़ेगा, किनारे पर बैठने से कोई गोताखोर नहीं बनता। शालिनी सरस्वती, आपके साहस और निडरता को सलाम।



ऊँकार फाउन्डेशन ट्रस्टा द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के लिए डाउन सिन्ड्रोम डे और होली सेलिब्रेशन का आयोजन

७ मार्च के दिन ओमकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में सब से पहले डाउन सिन्ड्रोम के बारे में जागृकता लाने के लिए और उस पर नियंत्रण लाने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए इसके बारे में विसतृत जानकारी दी गई थी। इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए डांस कम्पिटिशन का आयोजन किया गया था। 130 से अधिक बच्चों ने डांस प्रतियोगिता में

हिस्सा लिया था। प्रतियोगिता में विजेता और हिस्सा लेने वाले सभी बच्चों को पानी की बोतल गिफ्ट में दी गई थी। बाद में उपस्थित सभी बच्चों ने तिलक होली और फूलों से होली मनाई थी। होली सेलिब्रेशन में 10 से अधिक बच्चों ने मन भर कर होली का आनंद उठाया था। उपस्थित सभी बच्चों और उनके अभिभावकों के लिए नास्ते की व्यवस्था की गई थी। इन कार्यक्रमों में मनोदिव्यांग बच्चों ने उत्साह से हिस्सा लिया था।







स्मित चाईल्ड एज्युकेशन और गायत्री परिवार नारणपुरा परिजनों के सहयोग से मनोदिव्यांग बच्चों का एक दिवसीय प्रवास

अहमदाबाद अखबार नगर स्थित मनोदिव्यांग बच्चों की संस्था स्मित चाइल्ड एज्युकेशन और गायत्री परिवार नारणपुरा के सहयोग से दिनांक २१ मार्च के दिन संस्था के मनोदिव्यांग बच्चों के लिए एक दिवसीय प्रवास का आयोजन किया गया था। संस्था के मनोदिव्यांग बच्चों के ७-३० बजे लकजरी बस में बिठाकर प्रसिद्ध यात्राधाम डाकोर के दर्शन हेतु ला जाया गया था। प्रवास में डाकोर स्थित रणछोड राय मंदिर के साथ साथ गायत्री सेवा कुंज आश्रम, कुंज बिहारी आश्रम, डाकोर के आसपास स्थित अन्य रमणीय स्थान और वापस आते समय नेनपुर जलाराम मंदिर आश्रम आदि में दर्शन करवाए गये। संचालक श्री चंद्रसिंह चौहाण ने प्रवास में आये सभी बच्चों

और दर्शनार्थियों को विभिन्न स्थानों और उसके धार्मिक महत्व की विस्तृत जानकारी दी थी। प्रवास में गायत्री परिवार की बहनों ने गायत्री मंत्रोच्चार, कर्णप्रिय भजन, धून आदि से वातावरण को सुंदर बना दिया था। प्रवास में आये बच्चों के लिए सुबह-दुपहर और शाम तीनों समय नाश्ता, भोजन आदि का सुंदर आयोजन किया था। संस्था के प्रवास में आये सभी बच्चों के लिए यह केवल एक प्रवास या धार्मिक यात्रा नहीं थी। यह प्रवास मनोदिव्यांग बच्चों के जीवन में उत्साह और एक नयी आशा भरने के प्रयास था। उनकी स्मृतियों को सुंदर बनाने का छोटा सा कदम था। इस एकदिवसीय प्रवास के आयोजन में सहयोग देने वाले सभी का धन्यवाद।





વિશ્વ મહિલા દિવસ કે ઉપલક્ષ્ય મેં વર્કશાપ

વિશ્વ મહિલા દિન કે ઉપલક્ષ્ય મેં નવજીવન ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ કે મનોદિવ્યાંગ છાત્રોં કે કલ્ચર ગ્રુપ કે અંતર્ગત આર્ટીસ્ટ શ્રી રમેશભાઈ હાલારી કા આર્ટ વર્કશાપ

રખા ગયા થા । વર્કશાપ મેં બચ્ચોં કો મધર કા સ્કેચ બનાના સિખાયા ગયા થા । વર્કશાપ મેં ૨૫ સે અધિક બચ્ચોં ને હિસ્સા લિયા થા ।



સદ્ગુરુ ઝંઝરુશિ દ્વારા આ ચેનલ ઉપર દરેક પ્રશ્નોના સમાધાન માટે અલગ - અલગ મંત્ર પ્રશ્નોનાં સમાધાન માટે આપેલ છે, માટે આ ચેનલ અચૂક જોવી, સબસ્ક્રાઇબ કરી બેલ આઇકન (ઘંટકી) ઉપર ક્લિક કરવું.



મંત્રયુગપરિવર્તક ઝંઝરુ મહામંડલેશ્વર ૧૦૦૮
પ.પૂ. સંતશ્રી સદ્ગુરુ ઝંઝરુશિ સ્વામી

અમારા નવા વિડીયો મેળવવા માટે સબસ્ક્રાઇબ કરો.



સ્ટેપ- ૧ યૂ ટ્યૂબ ચેનલ પર ક્લિક કરો

સ્ટેપ- ૨ ટાઇપ કરો “SADGURU OMRUSHI”

સ્ટેપ- ૩ “SADGURU OMRUSHI” પર ક્લિક કરો

સ્ટેપ- ૪  **SUBSCRIBE** બટન ક્લિક કરો અને Bell (🔔) ની નિશાનીને દબાવો.

સદ્ગુરુ ઝંઝરુશિ દ્વારા રચિત રોજનો પવિત્ર શબ્દ નીચે આપેલ ચેનલ ઉપર આપ નિહાળી શકો છો.





मनो दिव्यांग जनों के लिए आयोजित हुआ लोक संगीत कार्यक्रम

'गाशे गुजरात गुजरात' राज्य संगीत नाट्य अकादमी गांधीनगर के आर्थिक सहयोग से गुजरात की संस्कृति, लोकगीत, लोकसंगीत को नयी पिढ़ी और अन्य लोग जान सके इस उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के ३३ वें स्थापना दिन के उपलक्ष्य में गुजरात युनिवर्सिटी के उपासना रंगमंच में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध गायक ब्रिजेश पारेख, राजु पारेख, मौलिका दवे, मोनिल पंड्या और पंकज दवे ने सुंदर प्रस्तुति की थी।

अध्यक्ष ने दीप प्राकट्य किया था। कार्यक्रम में संस्था के ट्रस्टी, क्यु एक्स कंपनी के विशालजी और चंद्रशेखरजी, कोर्पोरेटर भावीबेन पंचाल और पथिक पंचाल ने संस्था के वार्षिक रिपोर्ट का विमोचन किया था। कार्यक्रम में २६ मनोदिव्यांग छात्रों द्वारा बनाई गई पेइन्टींग का प्रदर्शन भी रखा गया था। कार्यक्रम की सफलता का सभी को श्रेय दिया गया और विशेष रूप से यह सुविधा उपलब्ध कराने के लिए गुजरात युनिवर्सिटी का धन्यवाद किया गया था।

मनोदिव्यांग छात्रों और कार्यक्रम में उपस्थित उनके परिवार के सदस्यों को लोक संस्कृति की झलक गीत-संगीत के माध्यम से मिली थी। नयी पिढ़ी को गुजराती भाषा और गुजराती संस्कृति से परिचित कराने का यह प्रयास था। उपस्थित अतिथियों और समारंभ





मनोदिव्यांग बच्चों ने मनाई होली

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए सदैव कार्यरत स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर द्वारा होली-धूलेटी के पर्व पर खजूर-सींग-चने, मुरमुरे, पिचकारी दिए गये थे। बच्चों ने तिलक और फूलों से होली का पर्व मनाया था।





अँकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

अँकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था



- ▲ World Autism Day ▲ Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲ Sports Day Celebration
- ▲ Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲ Janmashtami Celebration
- ▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365